# सांगीतिक उन्नयन में आगरा महानगर का योगदान
# (शास्त्रीय संगीत के परिप्रेक्ष्य में)

**दयालबाग ऐजूकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)**

**दयालबाग़ आगरा से संगीत विषय में पीएच.डी. की उपाधि हेतु**

**शोध-प्रबंध की प्रस्तावित-रूपरेखा**


**शोध निर्देशिका:**

**प्रो. नीलू शर्मा**

संगीत विभाग

**शोधार्थी:**

**रचना जिन्दल**

संगीत (वादन)



**कला-संकाय, संगीत विभाग**

**दयालबाग ऐजूकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)**

**दयालबाग आगरा- 282005**


**2022**

**भूमिका-**

भारतीय संगीत भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है। संस्कृति किसी समाज में गहराई तक व्याप्त गुणों के समग्र स्वरूप का नाम है जो उस समाज के सोचने, विचारने, कार्य करने के स्वरूप में अन्तर्निहित होते हैं।

संस्कृति का शब्दार्थ है उत्तम या सुधरी हुई स्थिति। मनुष्य स्वभावतः प्रगतिशील प्राणी है। यह बुद्धि के प्रयोग से अपने चारों ओर की प्राकृतिक परिस्थिति को निरन्तर सुधारता और उन्नत करता रहता है। ऐसी प्रत्येक जीवन पद्धति, रीति-रिवाज; रहन-सहन, आचार-विचार, नवीन अनुसंधान और आविष्कार के माध्यम से मनुष्य उच्च दर्जे को प्राप्त कर सभ्य बनता है। अर्थात् मनुष्य अपना जो विकास आरै उन्नति करता है, उसे ही संस्कृति कहा जाता है।

मनुष्य की जिज्ञासा का परिणाम धर्म और दर्शन के रूप में परिलक्षित होता है। सौन्दर्य की खोज करते हुऐ संगीत, साहित्य, मूर्ति, चित्र और वास्तु इत्यादि अनके कलाओं को मानव द्वारा ही उन्नत किया जाता है। इस प्रकार मानसिक क्षेत्र में उन्नति का सूचक उसकी प्रत्येक सम्यक्-कृति-संस्कृति का अंग बनती हैं। इसमें प्रधान रूप से धर्म, दर्शन, सभी ज्ञान, विज्ञानों, कलाओं, सामाजिक तथा सांस्कृतिक संस्थाओं का समावेश होता है।

भारतीय संस्कृति के संवर्धन, परिवर्धन एवं संरक्षण का सबसे विशाल स्त्रोत संगीत ही है। भारतीय ललित कलाओं में संगीत का स्थान महत्वपूर्ण है। गायन, वादन एवं नृत्य का त्रिवेणी संगम ही संगीत कहलाता है, जो एक दूसरे के सहायक एवं पूरक हैं। संगीत परम तत्व की प्राप्ति एवं अन्तःकरण का वह माध्यम है, जो महान सौन्दर्य की आभा से सदा अलौकिक करता रहा है। अभिप्राय यह है कि हृदयस्थ भावों की नादमयी अभिव्यक्ति ही संगीत है। संगीत एक ऐसी विधा है, जिसमें प्रतिभा व संस्कार के साथ-साथ समर्पण एवं परिश्रम की आवश्यकता होती है।

प्राचीनकाल से ही संगीत की दो धाराऐं समानान्तर रूप में प्रवाहित रही हैं। 1. मार्गी संगीत 2. देशी संगीत। प्रचलित देशी संगीत का विकास दो धाराओं में हुआ है। 1. शास्त्रीय संगीत 2. लोकसंगीत। शास्त्रीय संगीत नियमबद्ध होता है और लोक संगीत किसी के भी द्वारा उन्मुक्त रूप से प्रस्तुत किया जाता है।

हमारे देश भारत में 28 राज्य व 9 केन्द्रशासित राज्य हैं। सभी राज्यों की अपनी सांगीतिक विशेषताऐं हैं जैसे- राजस्थान का संगीत, उत्तर प्रदेश का संगीत, बंगाल का संगीत, पंजाब का संगीत, कर्नाटक संगीत आदि। इन्हीं में से एक उत्तर प्रदेश राज्य एक ऐसा विकसित राज्य है जिसमें 18 मण्डल हैं और उसी में से एक है - आगरा मण्डल, जिसका प्रमुख शहर है आगरा। जिसका हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में अत्यन्त विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण स्थान है। आगरा महानगर का संगीत के उन्नयन में विशेष योगदान रहा है तथा उसकी अपनी सांगीतिक महत्ता रही है। आगरा में शास्त्रीय एवं लोक संगीत की धारा सदियों से निरन्तर प्रवाहित रही है। यहाँ के संगीत में गायन, वादन आरै नृत्य की समृद्ध एवं गौरवशाली परम्परा रही है। संगीत कला को राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय पहचान व उसकी लोकप्रियता बढ़ाने में यहाँ के कलाकारों, संस्थाओं, सांस्कृतिक गतिविधियों इत्यादि का विशेष योगदान रहा है। आगरा महानगर के कलाकारों ने अपनी लगन एवं साधना से आगामी पीढ़ी के लिये नया मार्ग प्रशस्त किया है। आगरा महानगर ने गुरूशिष्य परम्परा को प्रश्रय व महत्व देकर शिष्य-प्रशिष्यों के माध्यम से अपनी परम्परा कायम रखते हुऐ संगीत के उन्नयन में यहाँ की ख्याति को चहुँओर प्रकाशमान किया है।

ऐतिहासिक दृष्टि से आगरा का संगीत ताजमहल से भी पुराना है। मुगलकाल में आगरा संगीत का सबसे बड़ा केन्द्र था। जहाँ आगरा अपनी अप्रतिम कृति ताज के कारण तो वहीं भगवान कृष्ण में धार्मिक आस्था के कारण विश्व में सुप्रसिद्ध है। इसी भूमि पर तानसेन ने अकबर की प्रशंसा में ध्रुपद रचे, एवं बैजू बावरा ने अपनी गायकी से संगीत जगत में अपना परचम लहराया है। इनकी गायकी का विषय राधा-कृष्ण की लीलाओं का वर्णन, देवी-देवताओं की स्तुति, संगीतशास्त्र एवं प्रकृति-सौन्दर्य के वर्णन इत्यादि से सम्बन्धित था। कला और संस्कृति की धरा ताजनगरी आगरा में संगीत के साधक कम नहीं हैं। गायन के क्षेत्र में "आगरा घराना" एक प्रसिद्ध घराना रहा है। महानगर के अनेकों सुप्रसिद्ध दिवंगत और वर्तमान संगीतज्ञों ने इसी संगीत को जीवंत रखने में अपनी महती भूमिका का निर्वाह किया है। इनमें से श्रद्धेय स्व0 पं0 गोपाल लक्ष्मण गुणे, स्व0 पं0 रघुनाथ तलेगाँवकर, तबला वादक स्व0 पं0 लल्लू सिहं, स्व0 पं0 सत्य नारायण वशिष्ठ, स्व0 पं0 कल्याण

चन्द्र लहरी, प्रसिद्ध गायक पं0 सत्यभान शर्मा, स्व0 पं0 केशव तलेगॉवकर, स्व0 पं0 अजय खन्ना, प्रसिद्ध सितार वादिका प्रो0 लवली शर्मा, प्रसिद्ध नृत्यांगना काजल शर्मा, प्रसिद्ध तबला वादिका प्रो0 नीलू शर्मा इत्यादि अनेक कलाकार हैं, जिन्होंने राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति अर्जित कर संगीत का प्रचार प्रसार किया है। साथ ही संगीत के प्रचार प्रसार के लिये सांस्कृतिक विभाग उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित ताज महोत्सव, निनाद संगीत महोत्सव तथा अन्य संगीत शिक्षण संस्थाओं एवं सामाजिक संस्थाओं द्वारा समय-समय पर विभिन्न प्रतियोगिताओं, संगीत कार्यक्रमों और सम्मेलनों के माध्यम से इस परम्परा को आगे बढ़ाने व युवा पीढ़ी को प्रोत्साहित करने का निरंतर कार्य किया जाता रहा है।

शोधार्थिनी आगरा महानगर से सम्बन्धित है इसलिये उसके मन में जिज्ञासा हुई कि वह इस विषय से सम्बन्धित कार्य करे। उपरोक्त विषय से सम्बन्धित पूर्व में हुए शोधकार्य की जानकारी हेतु उसने सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण किया जो इस प्रकार है -

**सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण-**

**पुस्तकें-**

1. भारतीय संगीत और संगीतज्ञ

लेखक- माथुर, रामलाल, बोहरा प्रकाशन, जयपुर

2. आगरा घराना परम्परा, गायकी व चीजें

लेखक- मेहता, रमन लाल

3. विभिन्न संगीत परम्पराओं के वाद्य एवं वादक लेखक- डॉ0 शिवनारायण, कनिष्का पब्लिशर्स

4. संगीत निबंध सागर

लेखक- गर्ग, डॉ0 लक्ष्मी नारायण

5. भारतीय संस्कृति-शाश्वत जीवन दृष्टि एवं संगीत

लेखक- गुप्ता, डॉ0 रूचि, कनिष्का पब्लिशर्स

6. उत्तर भारतीय संगीत के विविध आयाम

लेखक- गुप्ता, डॉ0 शुचि, संजय प्रकाशन

7. भारतीय संगीत को महान संगीतज्ञों की देन

लेखक - चक्रवर्ती, डॉ0 कविता, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर

8. पंजाब की संगीत परम्परा

लेखक- पैंतल, गीता, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली

9. हरियाणा तथा पंजाब की संगीत परम्परा

लेखक- धनकर, डॉ0 रीता, संजय प्रकाशन, दिल्ली

10. राजस्थान की संगीत परम्परा

लेखक- क्षीरसागर, डॉ0 मंजूश्री, महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश, जोधपुर

11. भारतीय संगीत जगत में वाराणसी का योगदान

लेखक - जौहरी, रेनू, क्लासिकल पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली

12. ब्रज की संगीत परम्परा

लेखक - सिहं , डॉ0 वन्दना, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली

**पत्रिकाऐं-**

1. आगरा में तबला परम्परा के संस्थापक पं0 लल्लू सिंह

लेखक- कर्ण, डॉ0 नागेश्वर लाल, नवम्बर 2001

2. आगरा घराने की आष्टागं गायकी

लेखक- राजोपाध्ये, डॉ0 वसंत राव, जुलाई 2014

3. यादों के आइने में स्व0 नलिन सुन्दरम् भटट्

लेखक- मिश्र, विजयशकंर, जनवरी 2009

**शोध प्रबन्ध-**

1. ब्रज के भक्ति सम्प्रदायों का समाज गायन - शर्मा, अंजू , 1991

2. ब्रज के लोकनाट्य भगत का सांगीतिक अध्ययन - गुप्ता, निम्मी, 2012

3. ब्रज प्रदेश के प्रमुख ऋतु पर्वों के संगीत का विश्लेष्णात्मक अध्ययन - वार्ष्णेय, अलका, 2003

4. ब्रज प्रदेश के जन्म एवं विवाह संस्कार सम्बन्धी लोक गीतों का अध्ययन - त्रिवेदी, मधुमिता, 2002

5. आगरा शहर की प्राइमरी स्तरीय शिक्षण (संगीत एवं अन्य विषय सम्बन्धी) हेतु संगीतात्मक दृश्य-श्रृव्य सामिग्री का विकास - सेठ, दीपाली, 2005

6. भारतीय संगीत में आगरा घराने के योगदान का ऐतिहासिक अध्ययन- बोस, बरनाली

7. आगरा व फिरोजाबाद के माध्यमिक विद्यालयों में संगीत के महत्व एवं रूचि का विकास करते हुऐ सम्बन्धित समस्याओं के निराकरण का प्रयास- यादव, नीलेश

8. आगरा स्थित माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं के संगीत (गायन) प्रशिक्षण में परम्परागत तथा नवीन प्रयोग विधियों का तुलनात्मक अध्ययन- चक्रवर्ती, स्मिता

9. आगरा घराने के परिप्रेक्ष्य में तराना गायन शैली- कौशिक, सोनल, 2013

10. शास्त्रीय संगीत के संवर्धन व संरक्षण में उत्तराखण्ड के कुमाऊँ मण्डल का योगदानः एक अध्ययन - रानी, कुमारी ऋतु, 2017

**लघुशोध प्रबन्ध-**

1. सुप्रसिद्ध तबला वादक स्व0 लल्लू सिंह जी का संगीत के क्षत्रे में योगदान - शोधार्थिनी - ज्योति सिंह- निर्देशक- प्रो0 नीलू शर्मा - दयालबाग़ शिक्षण संस्थान

2. आगरा महानगर के सुप्रसिद्व तबला वादक स्व0 पं0 सत्यनारायण वशिष्ठः व्यक्तित्व एवं कृतित्व - शोधकत्री- भूमिका अग्रवाल (एम.फिल.) - निर्देशक- डॉ. रश्मि श्रीवास्तव - दयालबाग़ शिक्षण संस्थान

3. अवनद्ध वाद्य वादन में ब्रज क्षेत्र के कलाकारों का योगदान (पखावज़ वाद्य के विशेष सन्दर्भ में) -शोधकत्री - दिव्या श्रीवास्तव - निर्देशक- प्रो0 नीलू शर्मा - दयालबाग़ शिक्षण संस्थान

4. सुप्रसिद्ध तबला वादक प्रो0 लल्लू सिहं - व्यक्तित्व एवं कृतित्व- शोधार्थिनी - कु0 आरती कुलश्रेष्ठ (एम.ए) - निर्देशक- प्रो0 नलिन सुन्दरम् भटट् -दयालबाग़ शिक्षण संस्थान

उपरोक्त शोध विषय से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करके यह ज्ञात हुआ कि आगरा महानगर के गायन, वादन तथा नृत्य के कलाकारों के सांगीतिक उन्नयन में योगदान पर कोई शोधकार्य नहीं हुआ है अतः विषय की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुऐ शोधार्थिनी ने सांगीतिक उन्नयन में आगरा महानगर का योगदान, शोध विषय का चयन किया जिससे संगीत जगत में आगरा महानगर का संगीत क्षितिज पर योगदान उजागर किया जा सके।

विषय कथन- सांगीतिक उन्नयन में आगरा महानगर का योगदान (शास्त्रीय संगीत के परिप्रेक्ष्य में)

**समस्या में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या-**

**उन्नयन-**

1. ऊँचाई, उन्नति, उठान

2. प्रतिष्ठा-पद, समुन्नति, तरक्की

3. उत्कर्ष, आत्मोत्कर्ष

भाषा शब्द कोश के अनुसार

**योगदान-**

1. भूमिका

2. हिस्सा, महान कार्य, कृत्य

3. अंशदान

हिन्दी शब्द कोश के अनुसार

**प्रस्तावित शोध का महत्व**

आगरा सांस्कृतिक नगरी के रूप में विख्यात है। गायन के 'आगरा घराने' के रूप में विकसित यहाँ की सांगीतिक धरोहर विश्व विख्यात है। यहाँ के कलाकारों (गायन, वादन, नृत्य), संगीत विद्वानों, शिक्षण संस्थाओं, एवं अन्य गतिविधियों से हो रहे सांगीतिक कार्य एक नवीन दिशा प्रदान करते हैं। प्रस्तुत शोध से सांगीतिक उन्नयन के लिये किये गये कार्य उजागर होंगे, जिससे शोधार्थी एवं जिज्ञासु लाभान्वित हो सकेंगे ।

**अध्ययन के उद्देश्य:**

- ❖ आगरा महानगर की सांगीतिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
- ❖ आगरा महानगर के कलाकारों (गायन, वादन व नृत्य) के सांगीतिक योगदान का अध्ययन करना।
- ❖ आगरा महानगर में सांगीतिक विस्तार (गुरू शिष्य परम्परा, शिक्षण संस्थाऐं, सामाजिक संस्थाऐं, संगीत कार्यक्रम, सम्मेलन, आकाशवाणी, दूरदर्शन) का अध्ययन करना।
- ❖ वर्तमान में आगरा नगर में सक्रिय सांस्कृतिक गतिविधियों का अध्ययन करना।
- ❖ आगरा महानगर के सांगीतिक उन्नयन में अपेक्षित संवर्धन में कलाकारों के विचारों का अध्ययन करना।

**परिसीमांकन**

1. शोधकार्य की समय सीमा तथा गहनतापूर्वक अध्ययन हेतु यह शोधकार्य विगत् 50 वर्षों में आगरा महानगर के योगदान तक सीमित रहेगा।

2. प्रस्तुत शोधकार्य के अन्तर्गत शास्त्रीय संगीत के परिप्रेक्ष्य में आगरा महानगर की शिक्षण संस्थाओं, सामाजिक संस्थाओं, संगीत समारोहों के अतिरिक्त लगभग 25 कलाकारों (जिन्होंने निरन्तर 10 वर्ष तक कार्य किया हो) के योगदान का अध्ययन किया जायेगा ।

**अध्ययन विधि-**

प्रस्तुत शोध कार्य साक्षात्कार, अवलोकन, प्रश्नावली, वर्णात्मक विधि द्वारा पूर्ण किया जायेगा ।

**अध्ययन के स्त्रोत -**

प्रस्तुत कार्य पुस्तकालय, पत्र-पत्रिकाओं, दृश्य-श्रृव्य सामग्री, विभिन्न विद्वानों के साक्षात्कार व इंटरनेट के माध्यम से पूर्ण किया जायेगा।

**अध्ययन के सोपान-**

**भूमिका-**

प्रथम अध्याय

❖ सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

**द्वितीय अध्याय**

❖ आगरा महानगर: एक परिचय

❖ आगरा महानगर: सांगीतिक पृष्ठभूमि

**तृतीय अध्याय**

❖ आगरा महानगर के कलाकारों का सांगीतिक योगदान

- गायक कलाकार
- वादक कलाकार
- नृत्य कलाकार

**चतुर्थ अध्याय**

❖ आगरा महानगर का संगीतिक विस्तार

- गुरू शिष्य परम्परा एवं घराना पद्धति
- आगरा महानगर की प्रसिद्ध शिक्षण संस्थाऐं
- आगरा महानगर की प्रसिद्ध सामाजिक संस्थाऐं
- आगरा महानगर में आयोजित होने वाले विभिन्न संगीत कार्यक्रम व सम्मेलन

- आकाशवाणी दूरदर्शन केन्द्र

**पंचम अध्याय**

- ❖ **वर्तमान में आगरा नगर में सक्रिय सांस्कृतिक गतिविधियाँ**
- ❖ **सांगीतिक उन्नयन में अपेक्षित संवर्धन में कलाकारों के विचार**

**उपसहांर-**

**संदर्भ सूची-**

1. श्रीवास्तव, दिव्या - अवनद्ध वाद्य वादन में ब्रज क्षेत्र के कलाकारों का योगदान (पखावज के विशेष संदर्भ में)

2. अग्रवाल, भूमिका - आगरा महानगर के सुप्रसिद्ध तबला वादक स्व0 पं0 सत्यनारायण वशिष्ठः व्यक्तित्व एवं कृतित्व

3. चौबे डॉ0 सुशील कुमार - संगीत के घरानों की चर्चा

4. शर्मा, भगवत शरण - ताल प्रकाश

5. गर्ग डॉ0 लक्ष्मीनारायण, संगीत मासिक पत्रिका - संगीत कार्यालय, हाथरस

6. गर्ग डॉ0 लक्ष्मीनारायण, संगीत निबन्ध सागर - संगीत कार्यालय, हाथरस

**सम्भावित प्रश्नावली**

1. आपका जन्म कब और कहाँ हुआ ?

2. आपके जीवन में संगीत के प्रति रूझान किसकी प्रेरणा से जाग्रत हुआ ?

3. आपने संगीत शिक्षा किस आयु से प्रारम्भ की ?

4. आपके द्वारा प्राप्त सांगीतिक उपलब्धियाँ कौन-कौन सी हैं ?

5. आपके शिष्यों के नाम ?

6. आपके द्वारा रचित अथवा प्रकाशित पुस्तकों का विवरण।

7. सांगीतिक उन्नयन हेतु संगीत के संवर्धन में आपके सुझाव ?

8. आपकी शिक्षण संस्थान की स्थापना कब हुई ?

9. आपकी शिक्षण संस्थान में कौन-कौन सी विद्या की शिक्षा दी जाती हैं ?

10. आपके शिक्षण संस्थान द्वारा संचालित गतिविधियाँ कौन-कौन सी हैं ?